स्वयं को गढ़ो...

एक आदमी बगीचे से गुज़र रहा था। उसने एक सुंदर फूल देखा और तोड़कर सूंघने लगा। फूल में रिंचक मात्र भी सुगंध नहीं थी। माली को उसने कहा:``ऐसे निरर्थक फूलों के पौधों को बोने का कोई अर्थ है क्या? वे जगह रोकते हैं। बिना महक के फूल बगीचे के लिए अभीशाप हैं, इतना भी तुम्हें समझ में नहीं आता।''

माली थोड़ा समझदार था। उसने कहा:``आपकी बात सही है, बिना महक के फूल संसार के लिए बोझ हैं। यह बात मुझे भी समझ में आती है, परंतु ``उसे'' समझ नहीं आती।''

``उसे'' माना किसको? उस आदमी ने माली से पूछा... ``उसे'' यानि इस दुनिया के सर्जन परमात्मा को।'' यह जगत भी तो आखिर परमात्मा का बगीचा है ना। परंतु परमात्मा के इस बगीचे में बिना महक के कितने लोग हैं! फिर भी परमेश्वर उन्हें जीने देते हैं। यदि इस बगीचे में भी बदबूदार चरित्रहीन लोगों की कमी होगी तो फैलती दुर्गंध रुकेगी!'' ऐसा कहकर माली ने विदाई ली। माली की बात में छिपा सत्य कुछ दिन तक उस आदमी को बेचैन करता रहा।

- ब्र. कु. गंगाधर

आज के जगत में मनुष्य गालियों की बौछार करता रहता है। चारो ओर हिंसा और अत्याचार का वातावरण है। दूसरों को दगा देना आज मनुष्य अपना जन्मसिद्ध अधिकार मानता है। मनुष्य प्रिय जनों को भी दगा देता है, मित्रों को भी दगा देता है, व्यापारी, ग्राहक को भी दगा देता है, नेतागण अपने खोखले वचनों से मतदाताओं को दगा देते हैं। मन में प्रश्न उठता है कि – सारे विश्व के मालिक होने के बावजूद तेरा जगत ऐसा! लेकिन ऐसा कहकर हम पलायनवादी नहीं बन सकते। मनुष्यों को गढ़ने का काम भले परमात्मा ने किया हो परंतु स्वयं को गढ़ने की स्वतंत्रता तो भगवान ने मनुष्य के हाथ में सलामत रूप से दे दी है।

मनुष्य बगीचे में घूमने जाते हैं। वहां लगे फूलों की सुगंध से मानव-मन प्रसन्न हो जाता है, लेकिन पुष्प की सुगंध वो संग्रह तो नहीं करता, खुशबू तो वो बगीचे में ही छोड़कर जाता है। फूल देते हैं सदा महकते रहने और सदा प्रसन्न रहने का संदेश, स्वयं के चरित्र की सुगंध यत्र-तत्र-सर्वत्र फैलाने का संदेश। मनुष्य को मैले कपड़े की चिंता होती है, इसलिए वो दागवाले वस्त्र बदलने को तत्पर होता है, लेकिन अपने मलिन चरित्र की ओर ध्यान नहीं देता। परिणाम स्वरूप बदमाशी, लुचाई, गाली-गलौज, दगाबाज़ी, बेवफाई, झूठ-कपट आदि से उसका जीवन लद गया है।

पहले का मनुष्य चरित्र को सर्वस्व समझता था। चरित्र को निस्कलंक रखने के लिए कुर्बानी देने को तैयार रहता था। अपनी संतानों को भी माँ-बाप धन या जायदाद का वर्सा देने के बजाय अपने चरित्र का वर्सा देने में धन्य मानते थे। आज विडम्बना यह है कि ज्ञानी जन बढ़े हैं लेकिन चरित्र के रक्षक की संख्या में कमी हुई है। जिस प्रकार चंदन का भार उठाने वाला सिर्फ भार ही उठाना जानता है, सुगंध से वो अनजान ही रहता है। उसी प्रकार चरित्रहीन मनुष्य मात्र धन और ज्ञान का बोझ उठाता है, इसलिए उसकी सद्गति नहीं होती।

मुंशी प्रेमचन्द ने `सेवा सदन' में भारपूर्वक कहा है कि, विद्वान होने के बावजूद मनुष्य आत्मिक गौरव प्राप्त नहीं कर सकता। उसके लिए सत्याचारित्रशील होना परम आवश्यक है। चारित्रशीलता के आगे विद्वता का मूल्य बहुत ही कम है।

एक बार महात्मा बुद्ध एक दिन धर्म संदेश देते-देते गांव की ओर आगे बढ़ रहे थे। रास्ते में एक तालाब के किनारे वृक्ष के नीचे बैठे। तालाब में मनमोहक कमल खिले थे। तरह-तरह के रंग वाले कमल के फूलों की अद्भुत छटा देख महात्मा बुद्ध अभिभूत हो गये और तालाब के जल में प्रवेश कर कमल-पुष्पों का आनंद लेने लगे। वे जैसे ही तालाब से बाहर निकले, उनके कानों में एक देवकन्या की आवाज़ सुनाई दी।

- शेष पेज 8 पर

चारो सब्जेक्ट में सफल होना ही पढ़ाने वाले के प्रति रिगार्ड है

दुनिया में कॉपीराइट करने का हक नहीं होता है, दोष माना जाता है लेकिन यहाँ पर बाबा ने कॉपीराइट करने की छुट्टी दे दी है। भले करो, जैसा करना हो जितना करना हो भले करो। बाबा को ऐसा कॉपी करो जो ऐज़ इट इज़ बाप समान बन जाओ। देहधारी को कॉपी करेंगे तो फेल हो जायेंगे। बाबा को कॉपी करना राइट है। इसमें निश्चय चाहिए, फिर विजय हमारी हुई पड़ी है। कभी भी न अपने में संशय, न किसी में संशय। संशय समय वेस्ट करता है यानि समय जो मुझे साथ देवे ना, वह नहीं देता है। भगवान मेरा साथी है, जिसका साथी स्वयं भगवान, क्या करेगा आंधी तूफान।

कमज़ोरी की बातें न चाहते भी यूज़ करते हैं तो यह नुकसानकारक हैं। किसी से भी थोड़ा भी लगाव व्यक्ति से या वैभव से है या अपने कमरे से है तो वो क्या ऊँच पद पायेंगे? तुम्हारा कमरा ऐसा हो जैसे बाबा का कमरा, तो समझें तपस्वीमूर्त है, देख करके ही खुश हो जायें।

बाबा ने बकरी समान मैं मैं करने वाली को शेरनी शक्ति बना दिया। तो अंदर अपने आपको पॉज़ीटिव पावरफुल बनाने की जिसको इच्छा है, बाबा उसे मदद करता है। और जिसे अपनी नेचर को ज़रा भी चेंज नहीं करना है, तो वो कहेंगे मैं कोशिश करती हूँ कि यह जो नेचर है, थोड़ा चेंज करे ना, तो बहुत ऊँच पद पा सकते हैं। हमारे से भी प्रैक्टिकली स्नेह ले सकते हैं। कोई छोटे बच्चे भी मुस्कराते हुए घड़ी-घड़ी टोली लेने आते हैं। मुस्कराना नहीं आयेगा तो कहेंगे टाइम ही नहीं है, करके बहाना बनायेंगे। सुस्ती, आलस्य, अलबेलापन, बहाना, सूक्ष्म किसी न किसी से ईर्ष्या है तो मुस्कराना नहीं आयेगा इसलिए बाबा कहते मेरी याद में रहो तो पहले वाला जंक उतर जावे और अभी कोई जंक चढ़ न जावे इसलिए परिपक्व याद की ऐसी स्थिति बनाओ और सदा उसको यूज़ करो। थोड़े में खुश नहीं होना चाहिए। जैसा अन्न वैसा मन, असर होता है। बाबा की याद में पकाया हुआ, भोग लगाया हुआ भोजन खाना चाहिए। बाबा का बन करके जिसने यह परहेज रखा है वो बहुत महान है। बाबा देखकर बहुत खुश होता है। और उनकी प्रकृति भी उनको अच्छा साथ देती है। तो जीना हो तो कैसे, मरना है तो कैसे मरो, आओ तो मैं बताऊं इसलिए जो आता है क्लास में सुना देती हूँ, सुनो न सुनो, करो न करो आ-पकी मर्ज़ी, पर प्रकृति के स्वभाव के वश न रहो। अपने स्वभाव के वश रह करके आओ मेरे से हैलो करो। क्या है कि सूक्ष्म देह-अभिमान अंदर से पकड़के बैठा है, छोड़ता नहीं है क्योंकि छोड़ना ही नहीं चाहते हैं ना। स्वभाव के वश में हैं ना। सूक्ष्म संशय है बाबा में, स्वयं में, एक दो में। दिव्य दृष्टि से बाबा को अच्छी तरह से देख लो सब, बाबा की दिल कैसी है? दिलवाला की दिल कैसी है? सबके दिलों को एक सेकण्ड में समझ करके दिल ले लेता है। मैं भी कोशिश कर रही हूँ टाइम न लगे जैसे बाबा दिल ले लेता है, वैसे दिलाराम से दिल ऐसी ही लग जाये जो दिल खुश हो जाये। अभी प्रैक्टिकली मेरे दिल से पूछो तो सारा दिन रात स्वप्नों में भी यही रहता कि बाबा की दिल कैसी है, ऐसी मेरी दिल बन जाए। जो कोई अपनी बात शब्दों में नहीं सुनाये, सुनाने के पहले ही उनकी दिल का संकल्प या शुभ भावना पूरी हो जाये। तो ऐसा सिम्पल और सैम्पल बनना माना बाबा की दिल को समझ के ऐसा बनना। दिल का आवाज़ शब्दों में नहीं होता है, सूक्ष्म कैच कर लेते हैं तो फिर शब्दों में आने की ज़रूरत नहीं है, सहज समझ जाते हैं। अगर ऐसे दिलवाला मंदिर में रहना है तो बाबा के दिल को समझो। व्यर्थ समय नहीं गंवाओ, यह श्रीमत शिव भगवानुवाच है ब्रह्मा बाबा के द्वारा। आज उसी श्रीमत अनुसार ही चारो सबजेक्ट में ध्यान रखने में सफल हैं तब कहेंगे यह भी पढ़ाने वाले के प्रति रिगार्ड है। ऐसे जो चारो सबजेक्ट में पास होंगे। समय अनुसार पुरुषार्थ ऐसा हो जो सफलता छिम-छिम करके आये।

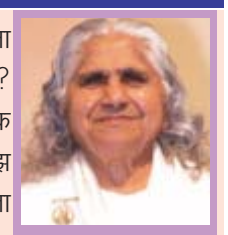

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

चेक करो मैं खुश हूँ? क्योंकि समय बीत जायेगा हँस के या रो के

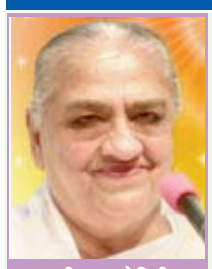

दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

बाबा की शिक्षा सदा याद रहनी चाहिए। कोई भी बात सोचें, पहले यह सोचें श्रीमत क्या है? लेकिन मूल बात है कि शक्ल में खुशी नहीं हो तो यह बहुत खराब बात है। खुशी होनी चाहिए, नहीं तो ज्ञान की भी ग्लानि होती है। अच्छा यह रहते हैं, अच्छा कामकाज तो करते हैं, कोई कम्पलेन्ट नहीं करते हैं ल-किन खुश भी नहीं रहते हैं, यह क्यों? प्रश्न पूछते हैं। तो यह चेक करना चाहिए कि मैं खुश रहता हूँ? खुशी एक चीज़ है जो जीवन के लिए ज़रूरी है, वो होनी चाहिए। कोई भी आता है तो क्या आके देखते हैं? यह रहे तो पड़े हैं लेकिन इनकी शक्लें क्या बोलती हैं! एक-एक से बातें तो नहीं करेंगे बैठके। शक्ल बोलती है, बोल-चाल बोलता है, कितना भी कोई छिपाने की कोशिश करे कि मैं चुप ही चुप रहता हूँ, बस और किससे बोलता नहीं हूँ... लेकिन चुप भी कहाँ तक रहेंगे? कारोबार में तो आना पड़ेगा ना, संगठन के बंधन में बन्धना तो पड़ेगा। कई तो थक जाते हैं, समझते हैं पता नहीं यह कब तक होगा? मतलब हमारा यही है कि खुशी नहीं गायब होनी चाहिए। फालतू नहीं सोचना चाहिए। काम का सोचना वो तो ज़रूरी है। तो सभी खुश हैं, यहाँ देखो आपको सेवा का चांस मिला है, कम मिला है क्या! आपको बाबा ने पसंद कर लिया, रहने का सर्टीफिकेट मिल गया, यह कोई कम नहीं है। इसका फायदा भी होता है, नुकसान भी होता है। तो अपनी सम्भाल आपेही करनी है, भले संगठन है उसका फायदा होता है लेकिन फिर भी हरेक को अपनी चलन से देखना चाहिए, संस्कार भी भिन्न-भिन्न होते हैं ना।

तो सभी खुश हैं, खुश तो होंगे। यहाँ पालना ही ऐसी है, जो कोई ऐसा नहीं होगा जो खुश न हो। कभी-कभी कोई बात होती हो तो हो सकता है। बाकी जो पालना का रूट रखा हुआ है, चलने का खाने का पीने का, वह मैं समझती हूँ कि चल सकते हैं। सिर्फ अपने को थोड़ा सा इज़ी नहीं छोड़ दें। सन्यासी थोड़ेही हैं फिर प्वाइंट्स बहुत होते हैं। जो चल रहे हैं, चल रहे हैं तो किस आधार से तो चलता होगा ना! तो नोट अच्छी तरह से करो, कोई उल्टा आधार तो नहीं हो गया है? मैं समझूँ मैं बहुत राइट हूँ और होवे नहीं, यह भी हो सकता है, इसलिए वेरीफाई करा लेना चाहिए, अगर फेथ है किसमें तो। बाकी खुश तो यहाँ सब रहते होंगे, खाना, पीना, उठना, बैठना सब साधन बहुत अच्छे हैं और क्लीयर हैं। कोई ऐसी मुश्किल बाहर की नहीं है। वैसे भी बचपन में कोई अच्छे चलने वाले होते हैं, तो उनको माँ बाप भी यही शिक्षा देते हैं कि खुश रहना। तो कभी आपको मुश्किल लगता है? लगता है तो बताओ, नहीं तो लिखके दो क्योंकि कोई को बताने में भी शर्म आती है, तो लिखत में दे सकते हैं लेकिन अपने को ठीक रखो, मतलब कुछ भी करो लिखत दो, बोलो नहीं बोलो, वह हरेक अपने आप सोचे।

समझो संगठन में भण्डारे में कोई ड्यूटी है, भण्डारे में तो कई कनेक्शन होते हैं, सभी में ठीक हैं, एक दो में लूज़ हैं थोड़ा, तो भी अवस्था तो ठीक नहीं होगी ना क्योंकि अभी आप लोग सकीलधे हो जो पहले से ही स्वाहा हो गये। दिन प्रतिदिन तो बढ़ते जाते हैं, तो यह नियम अभी सबको मज़बूत करना चाहिए। भले चल रहे हैं लेकिन अंदर बातें बहुत हैं। और जब तक बातें अंदर हैं तब तक प्रोग्रेस हो ही नहीं सकती है। शर्म के मारे भी नहीं कोई सुनाते हैं, कोई ज़्यादा दिमाग के कारण भी नहीं सुनाते हैं। दोनों प्रकार के हैं क्योंकि हमने तो शुरू से बचपन से लेकर पास किया है, तो यह तो होता ही है। इसमें बड़ी बात नहीं है। चलना ही है, जब सरेण्डर किया है तो रहना तो है ही ना। चलना तो पड़ेगा ही। जब चलना ही पड़ेगा तो क्यों नहीं खुशी खुशी से चलें! चलना तो पड़ेगा लेकिन करना क्या है? यह भी तो अपने लिए सोचे ना। तो किसकी मदद चाहिए, कोई सैलवेशन चाहिए, कुछ भी हो सकता है... तो खुश ज़रूर रहो। मौज कभी नहीं छोड़ो। अच्छा, समय तो बीत जायेगा, यह रोके भी बीत सकता है, हँसके भी बीत सकता है। रहना तो है ही। तो अभी क्यों नहीं अपना समय सफल करें, रहना तो है यह तो फैसला हो गया, सरेण्डर की लिस्ट में आया माना फैसला हुआ। जब फैसला हुआ तो उसी प्रमाण चलना चाहिए।